Answers to RSPL/2 (DS1)

खंड–क

1. (क) अशिक्षा व अज्ञानता से भारतीय किसानों का जीवन बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इनके कारण वे अंधविश्वास में आस्था रखते हैं, वे छोटे परिवार का महत्त्व नहीं समझ पाते और परिवार को बड़ा कर लेते हैं, जिससे उनके घरों मे जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं की कमी होने लगती है और खुशहाली सिमट जाती है।

   (ख) भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी भारत की अधिसंख्य आबादी कृषि पर निर्भर करती है। इस कारण यदि किसानों की स्थिति में सुधार आ जाए, तो भारत की स्थिति भी सुधर सकती है।

   (ग) किसानों की स्थिति में सुधार के लिए कृषि को बैंक, सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा मदद दी जाए। किसानों को उन्नत बीज, खाद, कीटनाशक सस्ते दामों पर उपलब्ध कराए जाएँ, कृषि का औद्योगिकीकरण किया जाए, उनके बच्चों को सस्ती शिक्षा दी जाए तथा उनके उत्पादन को ऊँचे दामों पर बेचने का प्रबंध किया जाए।

   (घ) अन्नदाता किसान के खुशहाल होने पर देश की गणना खुशहाल देशों में होते देर न लगेगी। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसानों की दशा में सुधार कैसे लाया जाए, इसी प्रश्न को गद्यांश में विकट प्रश्न कहा गया है।

   (ङ) लेखक को विश्वास है कि आज का अन्नदाता किसान कल स्वयं खुशहाल होगा।

   (च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'भारतीय किसान की बदहाली : कारण एवं निवारण' (भारतीय किसान से जुड़े अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य)

खंड–ख

2. जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयोग कर लिया जाता है, तब वह पद बन जाता है।
3. (क) आपके बेटे के आईपीएस बनने की ख़बर सुनकर मुझे बेहद खुशी हुई।
   (ख) न तो तुम यह कार्य कर सकते हो, न ही मैं।
   (ग) यदि हम अनुशासित होकर कार्य करते हैं, तो हमें निश्चित रूप से सफलता मिलती है। ('जब' से भी वाक्य स्वीकार्य)
4. (क) यथाविधि – विधि के अनुसार (अव्ययीभाव समास)
   शुभागमन – शुभ है जो आगमन (कर्मधारय समास)
   (ख) रात ही रात में – रातोंरात (अव्ययीभाव समास)
   पाठ के लिए शाला – पाठशाला (संप्रदान तत्पुरुष समास)
5. (क) **हमारे/मेरे बस्ते** में सुंदर-सुंदर किताबें **रखी हैं**।
   (ख) हमने **अपना** काम कर **लिया है**।
   (ग) आपने **अनेक** बार हमें यह रचना सुनाई है।
   (घ) आप **थोड़ी** देर के लिए **हमारी** बात सुनो।
6. (क) तुमने आज भी गृहकार्य नहीं किया तो अध्यापक जी तुम्हें **आड़े हाथों** लेंगे।
   (ख) व्यापार चलाना इतना आसान काम नहीं है, इसके लिए बहुत **पापड़ बेलने** पड़ते हैं।
   (ग) स्वादिष्ट भोजन देखकर **जी ललचाने/मुँह में पानी आने** लगता है।
   (घ) परीक्षा में प्रथम आने के लिए मोहित ने **आकाश-पाताल एक** कर दिया।

खंड–ग

7. (क) दूसरी बार कक्षा में अव्वल आने पर छोटे भाई के व्यवहार में अप्रत्याशित परिवर्तन आया। वह स्वच्छंद हो गया। वह सोचने लगा कि भाई को उसे डाँटने का कोई अधिकार नहीं रह गया है। उसके मन में एक कुटिल भावना भी आई कि अगर भाई साहब एक साल

और फ़ेल हो जाएँ तो वह उनके साथ उनके ही दर्जे में आ जाएगा, किंतु उसने इस दुर्भावना को अपने मन से निकाल दिया। उसे यह भी लगने लगा कि उसकी तकदीर बलवान है इसलिए वह पढ़े या न पढ़े, पास तो हो ही जाएगा और अब उसे पतंगबाज़ी का भी नया शौक लग गया।

(ख) 'तताँरा-वामीरो कथा' पाठ में कार निकोबार द्वीप में विवाह की निषेध परंपरा थी, जिसके अनुसार वहाँ एक गाँव के युवक-युवती दूसरे गाँव के युवक-युवती से विवाह नहीं कर सकते थे, रीति के अनुसार उनका एक गाँव का होना आवश्यक था। इसी रीति के कारण तताँरा-वामीरो के पवित्र प्रेम को भी गाँववालों ने स्वीकार नहीं किया। इस रीति के कारण तताँरा और वामीरो को बलिदान देना पड़ा तथा उनकी त्यागमयी मृत्यु के उपरांत इस परंपरा को द्वीपवासियों ने छोड़ दिया।

(ग) लेखक निदा फ़ाजली की माँ अत्यंत भावुक थीं। वनस्पति और जीव-जगत के बारे में वे अत्यंत संवेदनशील थीं। वे कहती थीं कि सूरज ढलने के बाद पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। ऐसा करने पर पेड़ रोते हैं। साँझ के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए, वे बद्दुआ देते हैं। दरिया को सलाम करना चाहिए। ऐसा करने पर वह खुश होता है। कबूतर हज़रत मुहम्मद साहब को अज़ीज़ हैं, अतः उन्हें सताना नहीं चाहिए। मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अजान देकर सबको सवेरे जगाता है।

(घ) सत्य, ईमानदारी, अहिंसा, मानवता, परोपकार, सहनशीलता, सच्चरित्रता जैसे शाश्वत मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान हैं और ये हमारी धरोहर हैं। आज हमारे समाज में इनका ह्रास अवश्य हुआ है परंतु ये मूल्य लुप्त नहीं हुए हैं। आज भी ये मूल्य उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने पहले थे। समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचाने के लिए ये मूल्य किसी संजीवनी से कम नहीं हैं। आज समूचा विश्व हमारी संस्कृति का अनुकरण करने को आतुर है। हमें भी समाज में इन मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल देना होगा क्योंकि मानवीय मूल्यों से अलग होना किसी भी समाज के लिए घातक है।

8. वज़ीर अली एक साहसी, स्वाभिमानी देशभक्त थे। उनके अंदर बहादुरी कूट-कूटकर भरी थी। कुल छह महीने में अवध के दरबार को अंग्रेज़ी असर से मुक्त कर देना उनकी बहादुरी व देशभक्ति का ही परिणाम था। अवध के तख़्त से हटा दिए जाने के बाद गवर्नर जनरल ने उन्हें कलकत्ता बुलाना चाहा, उन्हें यह बुलावा अच्छा नहीं लगा। इसी की शिकायत करने जब वे कंपनी के वकील के पास गए और उसने उनकी बात नहीं सुनी तथा उन्हें ही बुरा-भला कहने लगा, तो उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने बेखौफ़ होकर उसका कत्ल कर दिया। इसी प्रकार जान हथेली पर लेकर वे घुड़सवार के रूप में कर्नल कालिंज के खेमे में गए और वज़ीर अली की गिरफ़्तारी में मदद देने की बात कहकर उससे दस कारतूस प्राप्त किए और बाद में अपना सही परिचय देते हुए कर्नल की जान बख़शी की बात कहकर वहाँ से सकुशल चले भी गए। इन सभी घटनाओं से सिद्ध होता है कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही थे।

अथवा

बढ़ती आबादी का पर्यावरण पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इससे रहने योग्य भूमि की कमी हो गई। इस कमी को दूर करने के लिए जंगलों को काटा जाने लगा। समुद्र की ज़मीन को हथियाने के लिए लोग उसे पीछे धकेलने लगे। पशु-पक्षियों की जगह पर मानव ने कब्ज़ा जमाना शुरू कर दिया। प्रदूषण ने धरती को अपनी चपेट में ले लिया। इससे पर्यावरण असंतुलन की स्थिति आ गई। प्रकृति में आए असंतुलन का बड़ा ही भयानक परिणाम हुआ। इसके कारण गरमी में बहुत अधिक गरमी पड़ने लगी, बेवक्त की बरसातें होने लगीं। ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान आदि आकर हाहाकार मचाने लगे और नित्य नए-नए रोग धरती पर बढ़ने लगे।

9. (क) जिस प्रकार एक दूल्हा अपनी दुल्हन की माँग को सिंदूर से भरकर उसकी रक्षा का संकल्प लेता है और इस संकल्प को निभाने के लिए सदैव तत्पर रहता है, उसी प्रकार हमारे देश के सैनिक देश की धरती की रक्षा में अपना खून बहाकर अपने प्राणों को न्योछावर कर उसकी रक्षा का वचन निभाते हैं। इसी समानता के कारण 'कर चले हम फ़िदा' गीत में धरती को दुल्हन कहा गया है।

(ख) ग्रीष्म ऋतु की प्रचंड गरमी से व्याकुल होकर जब साँप, मोर, मृग व बाघ जैसे जन्मजात शत्रु व्याकुल होकर एक जगह बैठे दिखाई देते हैं, तब बिहारी को यह संसार तपोवन के समान लगता है।

(ग) मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं और उनके लिए अपने आराध्य की भक्ति इस संसार की सर्वोत्तम जागीर अर्थात संपत्ति थी। अपने आराध्य के प्रति किसी भी भक्त की सच्ची भाव-भक्ति ही उसकी जागीर है, जिसे कोई नहीं चुरा सकता। अतः भावपूर्ण भक्ति को सच्ची संपत्ति अथवा जागीर कहा गया है।

(घ) 'मनुष्यता' कविता में कवि ने उदार व्यक्ति की पहचान बताते हुए कहा है कि उदार व्यक्ति वह है, जो विशाल हृदय वाला हो। जो विश्व के समस्त मनुष्यों को अपना बंधु मानता हो तथा उनके प्रति अपने मन में अपनत्व की भावना रखता हो। जिसके लिए सारा संसार एक परिवार की भाँति हो, वही व्यक्ति उदार है। ऐसे व्यक्ति की गाथा स्वयं माँ सरस्वती गाती हैं। ऐसे व्यक्ति से यह पृथ्वी धन्य हो जाती है तथा उसकी कीर्ति समस्त विश्व में फैल जाती है।

10. 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं करता है कि प्रभु उसे जीवन की विपदाओं से आकर बचाएँ और जब विपरीत परिस्थितियाँ हों तब प्रभु किसी सहायक को भेजकर उसकी रक्षा करें, बल्कि इन विपरीत क्षणों में वह स्वयं जूझने के लिए प्रभु से निर्भयता, शक्ति, स्वास्थ्य व संयम आदि माँगता है। इन गुणों के द्वारा वह जीवन में कठिन परिस्थितियों में से खुद दो-दो हाथ करने का आकांक्षी है। इन उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध होता है कि यह कविता अकर्मण्य न बैठकर कर्म करने व जीवन की मुश्किलों से खुद दो-दो हाथ करने की सीख देती है।

अथवा

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में प्रकृति पल-पल अपने रूप को बदलती हुई दिखाई देती है। मेखलाकार पर्वत पर खिले नन्हे-नन्हे रंग-बिरंगे पुष्प पर्वत के नेत्रों के समान दिखाई देते हैं, जिनसे वह अपने विशाल रूप को तालाब के दर्पण में देखता है, झरनों की झर-झर की ध्वनि तेज़ हो जाती है, जिसे सुनकर झरनों द्वारा पर्वत के यश के गीत गाने की अनुभूति होती है। बादलों द्वारा पहाड़ को घेर लिए जाने पर यह अहसास होता है कि मानो पर्वत बादलों के पंख लगाकर आकाश में उड़ गया हो तथा नीचे केवल झर-झर की ध्वनि छोड़ गया हो। तालाब के पानी से उठती वाष्प और बादलों के स्पर्श से तालाब के जलने की कल्पना भी अद्भुत है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि यह कविता वर्षा के समय पर्वतीय क्षेत्र में प्रकृति के पल-पल बदलते रूपों को शब्दों के कैमरे में कैद करने में पूरी तरह सफल रही है।

11. (क) अगर हरिहर काका के गाँव में आज के समान मीडिया की पहुँच होती, तो हरिहर काका को इतना नारकीय जीवन नहीं गुज़ारना पड़ता। मीडिया महंत की दबंगई का पर्दाफ़ाश करती और अपहरण और मारपीट करने के बाद महंत इस प्रकार खुला न घूम रहा होता। ठीक ऐसा ही तब होता, जब भाई ज़मीन नाम न करने की बात पर उन्हें बुरी तरह पीट रहे थे। ऐसे समय में मीडिया जब हरिहर काका के साथ हुई ज़्यादती को प्रसारित करता तो संबंधित अधिकारियों का ध्यान उनकी ओर अवश्य जाता और वे इस प्रकार नारकीय जीवन जीने के लिए विवश न होते।

(ख) 'अम्मी' शब्द के प्रयोग से टोपी के घर में भूचाल आ गया। उसके यह शब्द बोलते ही खाने की मेज़ पर सबके हाथ रुक गए। परंपरावादी दादी ने इस यवन शब्द के प्रयोग को घर के संस्कारों का अपमान माना और जब टोपी को डाँटने के लिए टोपी की माँ ने पूर्वी भाषा में कुछ कहा तो उन्होंने उसे गँवारों वाली ज़बान कह दिया। इससे लड़ाई का मोर्चा बदल गया और दादी खाने की मेज़ से उठ गईं और यह जानकर कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, उसकी माँ ने उसे बहुत मारा।

खंड–घ

12. (क) **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने प्रेरित करते हुए कहा था—'नर हो न निराश करो मन को।' वे जानते थे कि मनुष्य के जीवन-पथ की सबसे बड़ी बाधा निराशा ही है। वास्तव में, निराशा मनुष्य को उदासीन बना देती है। निराश व्यक्ति मन से हार जाता है, जिसके कारण जीवन के किसी भी कार्य के प्रति उसके मन में वह उमंग नहीं रह जाती, जिसके बल पर कार्य को पूर्णता प्राप्त होती है। इसलिए कहा भी गया है कि 'मन के हारे हार है, मन को जीते जीत।' सच यही है कि मन में निराशा लिए कोई भी व्यक्ति अपने गंतव्य तक नहीं पहुँच सकता। निराशा मन में लगी दीमक के समान होती है, जिस प्रकार जिस लकड़ी पर दीमक लग जाती है, वह धीरे-धीरे खोखली होकर क्षीण हो जाती है, उसी प्रकार निराशाग्रस्त मन भी धीरे-धीरे खोखला होता जाता है। उमंग, उत्साह, उल्लास, प्रेरणा, प्रयास जैसे गुणों को निराशा की दीमक चट कर जाती है और ऐसा व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से टूटा हुआ महसूस करने लगता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस संसार में जितने भी सफल इंसान हुए हैं, उन्होंने अपने ऊपर इस निराशा को कभी हावी नहीं होने दिया। इसी गुण के कारण उन्होंने जीवन में जैसा सोचा, उन्हें प्राप्त हुआ। इस कारण जीवन में सफल होने के लिए निराशा को मन से निकाल फेंकना चाहिए क्योंकि इसके रहते कभी कोई उन्नति की राह नहीं दिखाई देती।

(ख) **अपने लिए भी निकालें समय**

आज का युग भौतिकवादी युग है। इस युग में जीवन रेल की गति से दौड़ रहा है। नगरों, महानगरों में आदमी का जीवन इतना व्यस्त हो चुका है कि उसे दिन के 24 घंटे भी कम लगने लगे हैं। सुबह से लेकर शाम तक काम, काम, बस काम। आराम के लिए जैसे उसकी दिनचर्या में समय ही नहीं है। आज मशीनों से खेलते-खेलते मनुष्य भी पूरी तरह मशीनी बनता जा रहा है। इस यांत्रिक युग में वह पैसा छापने की मशीन बन गया है। आज उसके पास दूसरों के लिए ही नहीं, बल्कि अपने व अपने परिवार के लिए भी समय का अभाव है। उसकी इस अति व्यस्तता ने उसको भौतिक सुख-सुविधाएँ तो दी हैं, किंतु उसके जीवन से सुख-चैन के उन पलों को छीन लिया है, जिनमें प्रेम पनपता था, रिश्तों में मज़बूती आती थी, एक-दूसरे के सुख-दुख के पलों में समान भागीदारी होती थी तथा भरोसे की नाजुक डोर मज़बूत होती थी। परिणामतः पारिवारिक टूटन, तनाव, घुटन, निराशा, सगे रिश्ते-नातों में तनातनी सामाजिक जीवन में दिखाई देने लगी हैं। वृद्धाश्रम में अपनों द्वारा ठुकराए वृद्धों की संख्या का बढ़ना, जीवन का अपने तक ही सिमट जाना, सामाजिकता का दायरा सिकुड़ना इसी व्यस्तता से उपजी विसंगतियाँ हैं। मनुष्य को चाहिए कि दौड़ते-भागते इस जीवन में कुछ समय अपने व अपनों के लिए ज़रूर निकाले, वरना इस दौड़ने-भागने में सुख-चैन जैसे शब्द उसके जीवन के शब्दकोश से हटते हुए बहुत अधिक देर नहीं लगेगी और वह उस सुकून के लिए तरस जाएगा, जो उसकी रूह में समाकर उसे चैन देता है।

(ग) **सड़क पर बहता खून : ज़िम्मेदार कौन**

आज महानगरीय जीवन बेतहाशा भाग रहा है। इसी आपाधापी में सड़कें भी लहूलुहान हो रही हैं। सड़क हादसों में हर दिन सैकड़ों लोग मारे जाते हैं और सैकड़ों की संख्या में घायल होते हैं। समाचारपत्र के पन्नों पर सड़क हादसों के समाचार अक्सर छपे हुए होते हैं। आखिर क्यों अमूल्य जीवन गति या असावधानी की भेंट चढ़ जाता है? आखिर इन सड़क हादसों के पीछे कौन ज़िम्मेदार है? आँकड़े बताते हैं कि ऐसे हादसों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली जा रही है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि आज के मनुष्य के पास समय का अभाव है। वह कम से कम समय में अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहता है। इसके लिए वह जहाँ वाहन को निर्धारित गति सीमा से बहुत अधिक तेज़ चलाता है, तो वहीं अन्य सड़क सुरक्षा नियमों की अनदेखी करता है। इससे कभी-कभी बहुत ही दर्दनाक हादसे हो जाते हैं। परिवार के परिवार ऐसे हादसों से उम्रभर नहीं उबर पाते। इन दुर्घटनाओं के लिए सीधे तौर पर तो वाहन चालक ही ज़िम्मेदार होते हैं, किंतु कई बार यह चूक यातायात पुलिस व सड़क निर्माण विभाग की असावधानी से भी घटित हो जाती है। इन हादसों को रोकने के लिए पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं तथा कभी-कभी ऐसे चालकों का चालान भी काटा जाता है, जो सड़क सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करते। आज तकनीकी युग में ऐसी कारें आ गई हैं, जो हवा से बातें करती हैं, ऐसी गाड़ियों को चलाने के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ संयम की ज़रूरत होती है। अतः कहा जा सकता है कि यदि हर व्यक्ति यह संकल्प करे कि वह यातायात के नियमों का पालन ईमानदारी से करेगा और गति से अधिक जीवन को मूल्यवान मानेगा, तो सड़क हादसों पर रोक लगाई जा सकती है।

13. परीक्षा भवन

अ ब स स्कूल

क ख ग नगर

दिनांक– ... /... /...

सेवा में

श्रीमान क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी

क ख ग नगर

विषय : नगर के ऑटो चालकों द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने की सूचना तथा कार्रवाई करने का अनुरोध

महोदय,

निवेदन इस प्रकार है कि मैं एक जागरूक नागरिक होने के नाते आपको नगर में ऑटो चालकों द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने के बारे में बताना चाहता हूँ।

आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे नगर के ऑटो चालक नियमों का पालन नहीं करते हैं। वे कई बार थोड़ा समय बचाने के लिए उल्टी दिशा से ऑटो लेकर आ जाते हैं और सवारी बैठाने के लिए कहीं भी खड़े हो जाते हैं। सवारी इन्हें कुछ कहे तो ये लड़ने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। मान्यवर, इनकी लापरवाही दूसरों के लिए कभी भी जानलेवा हो सकती है।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन न करने वाले ऑटो चालकों को पकड़कर उनके खिलाफ़ कठोर कार्रवाई करने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

अ०ब०स०

अथवा

परीक्षा भवन

अ०ब०स० स्कूल

क०ख०ग० नगर

दिनांक– ... /... /...

सेवा में,

श्रीमान संपादक

क०ख०ग० नगर

'पहली ख़बर'

दैनिक समाचारपत्र

विषय : क्षेत्र में चल रही रसोई गैस की कालाबाज़ारी को रोकने तथा दोषियों के खिलाफ़ कड़ी कार्रवाई करने के संबंध में।

महोदय,

निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके समाचारपत्र का एक जागरूक पाठक हूँ तथा आपका ध्यान क्षेत्र में चल रही रसोई गैस की कालाबाज़ारी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र में रसोई गैस की कालाबाज़ारी धड़ल्ले से चल रही है। इस कार्य में एजेंसी के कर्मचारी तथा रसोई गैस को अवैध रूप से बेचने वाले लोग शामिल हैं। वे ब्लैक में एक सिलेंडर के ₹ 1400 तक वसूल रहे हैं। उनके इस कार्य से उपभोक्ताओं को समय पर गैस नहीं मिल पा रही है। बुकिंग होने के बावजूद सिलेंडर घर पर नहीं पहुँच पाता है।

अतः आपसे अनुरोध हे कि कृपया इस विषय पर दोषी लोगों के खिलाफ़ कठोरतम कार्रवाई करें। इस कार्य के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

अ०ब०स०

14.

आर०डब्ल्यू०ए०, सेक्टर-75, घनश्यामपुरम

आवश्यक सूचना

(कूड़े को निर्धारित स्थान पर फेंकने के संदर्भ में)

दिनांक– ... /... /...

सभी सेक्टरवासियों को सूचित किया जाता है कि अपना कूड़ा या तो कूड़े वालों को ही दें या फिर उसके लिए निर्धारित स्थान पर ही कूड़ा फेंकें। यह देखा जा रहा है कि कुछ लोग कूड़े को खुली जगहों पर फेंक देते हैं, जिससे सेक्टर में गंदगी बढ़ती है। आवारा पशु कूड़े की उन थैलियों को सड़कों पर फैला देते हैं। ऐसे लोगों को चेतावनी दी जाती है कि यदि भविष्य में कोई भी खुले में कूड़ा फेंकता पकड़ा गया तो एसोसिएशन उस पर ₹ 5000 का जुर्माना करेगी। विश्वास है, सफ़ाई के इस पुनीत अभियान में हमें आपका सहयोग मिलेगा।

अध्यक्ष

अथवा

अ ब स विद्यालय, क ख ग नगर

आवश्यक सूचना

(विद्यालय में देशभक्ति गीतों के कार्यक्रम का आयोजन)

दिनांक– ... /... /...

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में हिंदी एवं संगीत विभाग की ओर से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्ति गीतों की प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी अपने नाम अपने कक्षाध्यापक को लिखवा दें। दिनांक .../.../... को विद्यालय के सभागार में आपको पहले से चौथे कालांश में अपने गीत की प्रस्तुति देनी है। प्रथम चरण की इन प्रस्तुतियों में श्रेष्ठ बीस बच्चों को प्रतियोगिता के फ़ाइनल के लिए चयनित किया जाएगा। प्रथम तीन विजेताओं को 15 अगस्त को पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

हिंदी विभागाध्यक्ष

(कार्यक्रम संयोजक)

15. **पहला गिद्ध** – भैया, बहुत दुखी दिखाई दे रहे हो।

दूसरा गिद्ध – हाँ भैया, दुख की तो बात है ही क्योंकि मनुष्य ने हमारा जीना मुश्किल कर दिया है।

पहला गिद्ध – सही कह रहे हो। मनुष्य ने तो हमारे महत्त्व को ही भुला दिया है।

दूसरा गिद्ध – पर्यावरण के लिए हमारी गिद्ध जाति ने कितना कुछ किया है। अगर हम न होते, तो मनुष्य को दुर्गंध व उसके कारण होने वाली बीमारियों का सामना करना पड़ता।

पहला गिद्ध – पर इसके बदले मनुष्य ने हमारे साथ बहुत अन्याय किया है। आज कीटनाशकों के प्रयोग और बढ़ती ग्लोबल वॉर्मिंग ने हमारे अस्तित्व को ही ख़तरे में डाल दिया है।

दूसरा गिद्ध – अगर ऐसा ही चलता रहा, तो हम भी धीरे-धीरे करके ख़त्म हो जाएँगे। (चिंतित होते हुए) क्या यह मनुष्य इतना क्रूर हो गया है कि हमारे बारे में ज़रा-सा भी नहीं सोचेगा।

पहला गिद्ध – भैया, ऐसा नहीं है, इस संसार में कुछ मनुष्य हमारे संरक्षण के लिए भी प्रयास कर रहे हैं।

दूसरा गिद्ध – यह तो अच्छी बात है। चलो, कुछ अच्छे लोग हमारे लिए चिंतित भी हैं।

अथवा

पिता – सुना है कि तुमने आज स्कूटी एक कुत्ते के ऊपर चढ़ा दी थी।

लड़का – पर पापा, वह कुत्ता एकदम से गली से निकलकर मेरी स्कूटी के नीचे आ गया।

पिता – तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे पता है कि तुम स्कूटी बहुत तेज़ चलाते हो।

लड़का – पापा, पर आज मैं तेज़ नहीं चला रहा था।

पिता – चलो, तुम्हारी बात पर विश्वास करता हूँ कि तुम आज तेज़ नहीं चला रहे थे, पर कल ही मुझे किसी ने बताया था कि तुम कम-से-कम 80 की स्पीड से इसे दौड़ा रहे थे।

लड़का – (गलती स्वीकार करते हुए) पापा, कल सचमुच मैं बहुत तेज़ चला रहा था, मैं वादा करता हूँ कि आगे कभी तेज़ नहीं चलाऊँगा।

पिता – (गले लगाते हुए) बेटा, यह तुम्हारी खूबी भी है कि तुम अपनी गलती स्वीकार कर लेते हो और फिर उसे दोहराते भी नहीं हो।

(लड़का पैर छूने के लिए झुकता है। पिता जी एक बार फिर उसे गले से लगा लेते हैं।)

16.

सोचिए, जल होगा तभी तो कल होगा
जल न होगा तो यह धरती भी न होगी
धरती पर जीवन भी न होगा

बूँद-बूँद में जीवन... इसे अवश्य बचाएँ
जलरक्षक कहलाएँ

अथवा

आकर्षक तीन बेडरूम वाला फ़्लैट अब दो बेडरूम से भी कम किराए पर

विशेषताएँ–

- मेट्रो स्टेशन से 800 मीटर की दूरी पर
- पार्क के एकदम पास
- सुरक्षा के लिए गार्ड की व्यवस्था
- इंवर्टर के साथ
- 24 घंटे बिजली/पानी
- बाजार और स्कूल मात्र 200 मी०

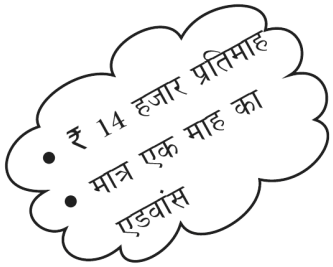

जल्दी करें!

संपर्क करें– शिवा टॉवर, मोबाइन नं०-9911xxxx